ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 12 अंक 2 कुल पृष्ठ-8 27 जुलाई से 2 अगस्त, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 श्रा. शु.-04

अमेरिका के अटलांटा नगर में स्थित यज्ञशाला के प्रांगण में स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी प्रवचन

ग्लोबल वार्मिंग का समाधान यज्ञ व पौधारोपण से ही संभव है

– स्वामी आर्यवेश

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने किया पौधारोपण

अमेरिका के अटलांटा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के साथ बायें से श्री बिरजानन्द एडवोकेट, अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विश्रुत आर्य, सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, पं. खगेन्द्र नाथ गिरी व प्रतिभा देवी

25 जुलाई 2017 : विश्व की समस्त आर्य समाजों के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अमेरिका के प्रसिद्ध शहर अटलांटा में पौधारोपण किया। स्वामी आर्यवेश जी अमेरिका में 27 जुलाई से 30 जुलाई तक अमेरिका के न्यूयॉर्क में आयोजित होने वाले 27वें अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए गए हुये हैं। स्वामी जी कार्यक्रम के मुख्य वक्ता रहेंगे। स्वामी आर्यवेश जी के साथ भारत से सार्वदेशिक सभा के महामंत्री प्रो. विट्ठल राव आर्य(हैदराबाद), सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री बिरजानंद एडवोकेट (राजस्थान) कोषाध्यक्ष प्रो. श्योताज सिंह (गुरुग्राम), गुरुकुल गौतम नगर के कुलपति स्वामी प्रणवानंद सरस्वती व वैदिक मिशन मुम्बई के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सोमदेव शास्त्री का प्रतिनिधि मंडल अमेरिका गया हुआ है। आज उन्होंने अटलांटा स्थित यज्ञशाला में पंडित खगेन्द्र नाथ गिरी के संयोजन में आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लिया व वहां पर पौधारोपण किया। स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर अपने विचार रखते हुये कहा कि पर्यावरण की समस्या से निपटने के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपने हाथ से हर वर्ष कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाये तथा उसकी परवरिश भी करे। उन्होंने ग्लोबल वार्मिंग का स्थाई समाधान यज्ञ का वैज्ञानिक विधि से निरन्तर करना व पौधारोपण करना बताया। स्वामी जी ने कहा कि पर्यावरण और हमारा जीवन एक सिक्के के दो पहलू हैं। आज सारे विश्व में पर्यावरण को लेकर गम्भीर चिन्तन चल रहा है। पर्यावरण हमारे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता

अगले पृष्ठ पर जारी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पृष्ठ–1 का शेष

अमेरिका के अटलांटा नगर में स्थित यज्ञशाला के प्रांगण में स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी प्रवचन

है। इसलिए स्वच्छ पर्यावरण का हमारे लिए विशेष महत्त्व है। मनुष्य की प्रकृति उपभोगी है और उसकी यह प्राकृतिक प्रवृत्ति पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव छोड़ती है। आज विश्व के अस्तित्व के लिए सर्वाधिक घातक समस्या यदि कोई है तो वह है पर्यावरण प्रदूषण। सर्वगामी प्रदूषण ने वैज्ञानिकों, चिकित्सकों एवं विशेषज्ञों को गम्भीर चिन्ता में डाल दिया है। स्वामी जी ने कहा कि बढ़ते हुए प्रदूषण का निवारण करने के लिए सबसे उत्तम और सरल कोई रास्ता है तो वह है वृक्षारोपण तथा हवन यज्ञ। हवन यज्ञ पर्यावरण को शुद्ध करने का अत्यन्त सुगम तथा श्रेष्ठ साधन है, क्योंकि हमारे समस्त योगक्षेम का केन्द्र यज्ञ ही है। प्राचीन काल में केवल वैदिक संस्कृति ही पृथ्वी पर अपने वैभव से पूर्ण थी। उस समय हमारे ऋषि मुनि नित्य विधिपूर्वक यज्ञ किया करते थे, क्योंकि यज्ञ मनुष्य का श्रेष्ठतम कर्म है। 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' स्वामी जी ने कहा कि यदि प्रत्येक मनुष्य पर्यावरण की शुद्धि के लिए प्रतिदिन यज्ञ करना प्रारम्भ कर दे और अधिक से अधिक वृक्ष लगाना प्रारम्भ कर दें तो पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से अविलम्ब छुटकारा मिल सकता है। उन्होंने कहा कि हम सबको यज्ञ प्रक्रिया से जुड़ना होगा तभी इस संकट से मुक्ति प्राप्त हो सकेगी।

सभा मंत्री प्रो. विट्ठल राव आर्य ने हैदराबाद में आयोजित राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में यज्ञ के साथ पेड़ लगाने का अह्वान किया था। उसके बाद वो जहाँ जाते हैं एक पेड़ अवश्य लगाते हैं। इसी कड़ी में उन्होंने यहां भी पेड़ लगाया। इस अवसर पर प्रो. विट्ठलराव आर्य ने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने में वृक्ष बड़ा योगदान देते हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य और हर प्राणी का जीवन, जल, जमीन, जंगल अर्थात् पेड़–पौधों और ऊर्जा तथा वायु पर टिका हुआ है। वर्षा के लिए जंगलों का होना या बहुतायत में वृक्षों का होना अत्यन्त आवश्यक है। जंगल एवं पेड़–पौधों से जहाँ वर्षा होती है वहीं शुद्ध वायु के लिए भी वृक्ष बहुत उपयोगी हैं। उन्होंने कहा कि बिना पेड़–पौधों के न शुद्ध वायु मिल सकती है और न ही समय पर वर्षा के माध्यम से पानी। इसलिए हर व्यक्ति का जीवन में महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य होना चाहिए कि वह अधिक से अधिक वृक्ष लगाये क्योंकि प्रदूषण से निपटने में यह वृक्ष बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पंडित खगेन्द्र नाथ गिरी के सुपुत्र सुदीप की स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत यज्ञ से हुई। इस अवसर पर पंडित भूपेंद्र तिवारी, श्रीमती प्रतिभा व सुवीर कुमार ने भी सहयोग किया। इस अवसर पर सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

अलबामा राज्य के मंटगोमरी में स्वामी आर्यवेश जी सहित पूरे प्रतिनिधि मण्डल का किया गया भव्य स्वागत

अटलांटा से लगभग 350 किलोमीटर दूर मंटगोमरी के हिन्दू मंदिर में भारतीय दल का विशेष स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ विपिन कुमार व मंजू कुमार ने किया। धर्म का वास्तविक स्वरूप विषय पर स्वामी आर्यवेश जी का प्रवचन भी हुआ। स्वामी जी ने कहा कि जब तक हम सही अर्थों में मनुष्य नहीं बन जायेंगे तब तक सुख–शांति तथा

धार्मिकता का कोई अर्थ नहीं रह जाता। उन्होंने कहा कि ईश्वर की बनाई सृष्टि में परस्पर सहयोग, सहृदयता एवं सौहार्द की भावना नहीं बनेगी तब तक दुनिया में चल रहे सभी प्रकार के झगड़े–झंझट, मार–काट एवं अशांति बनी रहेगी। उन्होंने कहा कि परमात्मा ने मानव मात्र के कल्याण के लिए वेदों का ज्ञान प्रदान किया और वेदों में यह स्पष्ट निर्देश है कि परमात्मा के द्वारा पैदा किये गये सभी स्त्री–पुरुष ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान एवं संसाधनों को प्राप्त करने के समान अधिकारी हैं। इसीलिए उनमें मानवता तथा इंसानियत का होना आवश्यक है। जो व्यक्ति एक अच्छा इन्सान बन जायेगा वह किसी के प्रति भेदभाव, घृणा या द्वेष नहीं रख सकता। सबके प्रति मित्रता, प्रेम रखने वाला व्यक्ति ही ईश्वरीय गुणों का सच्चा अनुयायी होता है और सच्चे अर्थों में वही व्यक्ति धार्मिक कहलाने के योग्य है। स्वामी जी ने यम–नियमों के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि जैसे जीवित रहने के लिए शुद्ध वायु की आवश्यकता पड़ती है उसी प्रकार सुख–शांति, समृद्धि एवं उन्नति प्राप्त करने के लिए शुद्ध सात्विक समाज भी चाहिए। उन्होंने कहा कि हम जैसा व्यवहार दूसरों से चाहते हैं वैसा ही व्यवहार हम दूसरों के साथ करें यही धर्म है।

वैदिक टैम्पल अटलांटा में विशेष वैदिक सत्संग में स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यकर्ताओं को किया सम्बोधित

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान विश्रुत आर्य के संयोजन में वैदिक टैम्पल अटलांटा में वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। इसमें स्थानीय स्तर पर आर्य समाज के सभी अधिकारियों ने भाग लिया जिनको स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक विचारधारा के प्रचार व प्रसार को कैसे तेज करना चाहिए विषय पर अपने विचार सांझा किये।

स्वामी जी ने अपने प्रेरणादाई उद्बोधन में आर्य समाज के अतीत पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एक बार फिर आर्य समाज के प्राचीन तेजस्वी स्वरूप को विश्व के सामने प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। आज विश्व की जनता संकटों तथा समस्याओं से जूझ रही है। उन्होंने आर्यजनों का आह्वान करते हुए कहा कि वे आर्य समाज को उन्नति पथ पर ले जाने के लिए सक्रिय हो जायें। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक सुधार, राष्ट्र निर्माण, मानव निर्माण तथा वेद प्रचार हेतु समर्पित कर दिया था। हम सब उनके विचारों, उनके बताये मार्ग, ज्ञान व वेद के प्रकाश को घर–घर में पहुँचायें। भारतीय संस्कृति, सदाचार तथा वैदिक सिद्धान्तों के विषय में अपने मित्रों, अपने आस–पड़ोस के व्यक्तियों से वार्ता करें तथा अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियों तथा समाज में फैल रहे भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर आर्य समाज क्या सोचता है और क्या कर रहा है इसकी विस्तार से चर्चा करें। हम सब मिलकर उक्त विभिन्न मुद्दों पर काम करें। जन–जन को इसके बारे में बतायें और अपने विशिष्ट कार्यक्रमों के द्वारा लोगों को आकृष्ट करने का प्रयास करें। आज समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करके सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जोरदार अभियान चलाने की आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि स्थानीय आर्य समाजों को व्यवस्थित तथा सक्रिय करके अपने व्यवहार तथा आचरण से लोगों को प्रभावित करें, उनके सुख–दुःख में भागीदार बनकर अपने साथ जोड़ने का कार्य करें तो निश्चित रूप से लोगों का झुकाव आर्य समाज की तरफ होगा तथा वे हमारे विचारों से, हमारे सिद्धान्तों से प्रभावित होकर आर्य बनेंगे और समाज को उन्नत करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करेंगे।

27 जुलाई से 27वां अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन प्रारम्भ होगा

ज्ञातव्य हो कि अमेरिका में आर्य समाज की प्रथम इकाई स्थापित करने वाले आर्य नेता धर्मजित जिज्ञासु की स्मृति में 27 जुलाई, 2017 से 27वाँ अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन अमेरिका के प्रसिद्ध शहर न्यूयॉर्क के द्रोपदी जिज्ञासु आश्रम में किया जा रहा है।जिसमे भारत के अतिरिक्त भी कई स्थानों से आर्य नेता व विद्वान भाग लेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

श्रावणी पर्व पर विशेष

ईश्वरीय ज्ञान 'वेद'

– आचार्य डॉ. ओम प्रकाश वर्मा 'विद्यावाचस्पति'

आज संसार के सभी विद्वान निर्विवाद रूप से स्वीकार करते हैं कि वेद मानव जाति का प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। आधुनिक युग के महानतम मनीषी महर्षि दयानन्द सरस्वती को समग्र चिन्तन एवं मानव जाति के सर्वांगीण उत्थान के लिए उनके द्वारा प्रस्तावित बहुआयामी कल्याण योजना की आधारभूमि वेद ही है। उन्होंने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सर्वाधिपति परमेश्वर के आदेश के रूप में मान्यता दी है। उनके विचार से वेदों के अनुकूल आचरण ही लौकिक प्रगति तथा पारलौकिक आनन्द का मुख्य साधन है और वेदाज्ञाओं का उल्लंघन करने से ही कोई मानव समूह पतन के गर्त में गिरकर दारुण दुख भोगता है। उनके प्रवचनों, लेखों और वक्तव्यों के अतिरिक्त उनकी भेंटवार्ताओं में भी इसके प्रमाण उपलब्ध हैं। लाहौर में वेदोपदेश करते हुए एक पादरी के प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था, ''कोई वेद को माने या न माने, परन्तु जो उसके आदेश के अनुसार अपना कार्य करता है, वह उसके उत्तम फल को भोगता है। आप लोगों ने वेद को न मानकर भी वेदमार्ग को अपनाया, जिससे आपका मत सर्वप्रिय हो गया। हमने वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानकर भी न अपनाया, जिसके कारण हमारी दुर्दशा हो गई। ''वेदों के साथ किसी मानव रचनाकार का नाम सम्बद्ध न होने से भी वेद को ईश्वर प्रदत्त निधि के रूप में स्वीकार किया गया है। स्वयं वेद में ही चारों वेदों को ईश्वर की देन कहा गया है; तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दासि जक्षिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत्।'' ऋग्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद उस यज्ञ रूप परमेश्वर की उत्पत्ति है। अतः मानवीय सृष्टि के साथ ही वेदों का अवतरण होना युक्ति संगत प्रतीत होता है।

वेद का अर्थ है-ज्ञान। पुस्तक के रूप में वेद वह साहित्यिक समग्रता है जिसमें ज्ञान-विज्ञान के समस्त सूत्र संकलित हैं। मनु के अनुसार वेद 'सनातन चक्षु हैं और देव दयानन्द के अनुसार 'वेद सब विद्याओं की पुस्तक है।'' सामान्य अर्थों में वेद वह ग्रन्थ है जिसमें समस्त विद्याओं तथा धार्मिक क्रियाओं का उल्लेख है, जिसमें मानवीय कर्तव्यों और अकर्तव्यों का निर्देश किया गया है, जिसमें सत्य, असत्य एवं ब्रह्म को जानने तथा लौकिक सुख और पारलौकिक आनन्द की प्राप्ति के साधन निहित हैं। वेद चार हैं - ऋग्वेद में ज्ञान-विज्ञान की व्याख्या है, जिसमें तिनके से लेकर परमात्मा पर्यन्त समस्त पदार्थों का तार्किक विश्लेषण किया गया है। इसमें दस मण्डल तथा दस हजार पांच सौ बाइस मंत्र हैं। यजुर्वेद मानवीय कर्मों तथा अनुष्ठानों का ग्रन्थ है, जिसमें चालीस अध्याय तथा एक हजार नौ सौ पिछहत्तर मंत्र हैं। 1873 मंत्रों वाले संगीतात्मक, सामवेद का सम्बन्ध परमेश्वर की उपासना से है और अथर्ववेद के बीस काण्डों के अन्तर्गत 5970 मंत्रों में परम ब्रह्म परमेश्वर और उसकी रचना से सम्बन्धित विभिन्न विषयों, शारीरिक, प्राकृतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक पक्षों की विवेचना की गई है। मन्त्र केवल शब्दों का लयात्मक समूहीकरण नहीं है। मन्त्र विशिष्ट परिणाम उत्पन्न करने वाला शब्द समूह है। वेदमंत्रों को वैदिक ऋचाएँ भी कहा जाता है। आदि सृष्टि में मानव जाति की उत्पत्ति के साथ ही ईश्वर की इच्छा और योजना से मनुष्यों के कल्याण के लिए चारों वेदों का प्रकाश चार पुण्यात्मा ऋषियों की आत्मा में हुआ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की ज्ञानराशि को हृदयंगम करने वाले इन ऋषियों के नाम क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा है। इनके माध्यम से गुरु-शिष्य परम्परा के अनुसार वेद में निहित ज्ञान अन्य मनुष्यों तक पहुँचा। इस नैसर्गिक ज्ञान का हस्तान्तरण मौखिक प्रवचन और श्रवण से ही होता रहा। अतः वेद को श्रुति भी कहा जाता है।

वेद आदिकाव्य है। अधिक उपयुक्त शब्दों में अनादि काव्य है, क्योंकि उसका अन्त नहीं होता। वेद का कोई मरणशील निर्माता नहीं। उसका दाता है जो स्वयं अनादि और अनन्त है, चैतन्य का स्रोत है, ज्ञान का उद्गम है। ज्ञान विज्ञान का प्रत्येक क्षेत्र, शोध की प्रत्येक प्राकल्पना और अनुसन्धानकर्ताओं का प्रत्येक सत्यापित निष्कर्ष भी साहित्य की प्रत्येक विद्या, मानव मस्तिष्क की प्रत्येक उपलब्धि का पूर्वांकन किसी न किसी वैदिक ऋचा के गर्भ में स्थित है। मैक्समूलर ने लिखा है, ''वेदों को हम इसलिए आदि सृष्टि से कह सकते हैं कि उससे पूर्व ज्ञान का अन्य कोई निश्चित चिन्ह नहीं मिलता।'' वेद की प्रामाणिकता के विषय में वह लिखता है, ''वेदों का प्रत्येक मन्त्र, नहीं नहीं, प्रत्येक शब्द प्रमाणिक लेख है'' वेद कालबाधित नहीं, सार्वकालिक है जो समस्त प्राकृतिक और मानवीय समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। मानव सृष्टि को प्रारम्भ से आज तक संचित ज्ञान के बहुआयामी भंडार का ही नहीं, अपितु भविष्य में सम्भावित वैज्ञानिक उपलब्धियों का उद्गम भी वेद हैं। वैदिक ऋचाओं के लघु सूत्रों में ज्ञान-विज्ञान के विशाल आधुनिक महावृक्ष की असंख्यात शाखाओं, उपशाखाओं के मूल तन्तु निहित हैं। निष्पक्ष भाव से जिज्ञासा वृत्ति के साथ वेदों का पर्यावलोकन करने से सहज ही स्पष्ट हो जाता है कि समस्त वैज्ञानिक सिद्धान्त और मानवीय ज्ञान बीज रूप में वेदमंत्रों में विद्यमान हैं। अध्येताओं और शोधकर्ताओं का पुरुषार्थ तथा नवीनता केवल वैदिक सूत्रों के बोध व्याख्या और विश्लेषण तक सीमित है। प्रसिद्ध संत एडवर्ड रिपोर्टर के शब्दों में, ''हम किसी नवीन दर्शन की आशा या आकांक्षा कठिनता से ही कर सकते हैं, क्योंकि सम्पूर्ण ऐतिहासिक विकास में वेदों के विचार ही बीज रूप में चले आ रहे हैं।' वेद-बिन्दुओं की व्याख्या और विश्लेषण से ही मानवीय ज्ञान के अक्षय कोष का विस्तार हुआ है। दयासागर परमेश्वर ने ऋषियों के हृदय में वेदों का प्रकाश इसलिए किया ताकि मनुष्य जाति अपने भौतिक और सामाजिक जीवन को सुखी, समृद्ध, सात्विक, संतुष्ट, सार्थक तथा व्यवस्थित बना सके और संसार को छोड़ने के पश्चात् मोक्ष प्राप्त कर सके।

भारतीय धर्म और संस्कृति का विशाल भवन वेदों की नींव पर खड़ा है। आचार्य मनु के विचार से नास्तिक वह नहीं है जो ईश्वर को नहीं मानता, बल्कि नास्तिक वह है जो वेद को नहीं मानता, ''नास्तिको वेदनिन्दकः'' 'उसके अनुसार लौकिक वस्तुओं को देखने के लिए जिस प्रकार नेत्रों की आवश्यकता है उसी प्रकार अलौकिक रहस्यों को जानने के लिए वेदों की आवश्यकता है। उसके शब्दों में, ''वेदशास्त्रार्थ तत्वज्ञों यत्र कुत्राश्रमो वसन्। इहैव लोके तिष्ठन स ब्रह्मभूयायकल्पते'', वेदार्थ जानने वाला किसी भी आश्रम में इसी लोक में ब्रह्म का साक्षात्कार करता है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार धन से परिपूर्ण पृथ्वी का दान करने से जो पुण्य लाभ होता है, वही लाभ वेद का अध्ययन करने से होता है। ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद् वेद के ही व्याख्यान हैं। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष शास्त्रों के स्रोत भी वेद हैं। भारत के विभिन्न सम्प्रदायों के मूल में वेद का ही कोई उपदेश निहित है। यथार्थ ज्ञान के अभाव तथा निहित स्वार्थ के कारण कहीं-कहीं वेदविरूद्ध बातों का समावेश कर दिया गया है। यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि ईसाइयत और इस्लाम में प्रचलित सर्वहितकारी सर्वमान्य विचार भी वेदों की ही देन है। वेद भाषा विज्ञान का भी आधार है। पहले अधिकांश विद्वान लैटिन, हिब्रू और ग्रीक भाषाओं को ही मूल मानव भाषा मानते थे, किन्तु अब सभी संस्कृत को सब भाषाओं का मूल स्रोत मानते हैं।

हजारों वर्षों से पृथ्वी को चपटी कहने वाले लोग अब इसे गोल मानने लगे हैं। वैज्ञानिक खोज ने सिद्ध कर दिया है कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, जबकि अभी तक पश्चिमी और मुस्लिम विद्वान् यही मानते थे कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य घूमता है। ऋग्वेद की प्रारम्भिक ऋचाओं में ही इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख है कि पृथ्वी गोल है और पृथ्वी समेत समस्त ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं। अन्तरिक्ष में सूर्य से भी अधिक विशाल तारों (अगस्त्य, ज्येष्ठा आदि) का गुरुत्वाकर्षण के नियम का, अग्नि-जल के संयोग से तथा विद्युत शक्ति से चलने वाले वेगवान् वाहनों का वर्णन भी वेदों में उपलब्ध है। वैदिक गणित का महत्त्व तो आज शिक्षा जगत ने पहचान ही लिया है। पारिवारिक जीवन, आर्थिक व्यावसायिक व्यवस्था, शासन-प्रशासन तन्त्र, कला और शिल्प, व्यापार और वाणित्य, शिक्षा और प्रशिक्षण मानवीय सम्बन्ध, राजा और प्रजा, लोकतान्त्रिक समाज व्यवस्था, कृषि, पर्यावरण इत्यादि समस्त विषयों पर वेदमंत्र मानव जाति का मार्गदर्शन करते हैं।

ज्ञान सीखने की प्रक्रिया का परिणाम है। जीवन के अनुभव मात्र से ज्ञान में वृद्धि करके ग्रन्थों का निर्माण नहीं होता। पढ़ने या सुनने से ज्ञान की प्राप्ति होती है। ''वैज्ञानिक सिद्धान्तों का निर्माण भी पूर्व ज्ञान पर आधारित होता है। यदि स्वभाव से ही मनुष्यों को क्रमिक ज्ञान प्राप्त होता तो गिरि कन्दराओं, सघन जंगलों तथा दुर्गम क्षेत्रों में सहस्रों वर्षों से रहने वाले तथाकथित आदिवासी अभी तक भी अज्ञानता और दरिद्रता की अवस्था में न रहते। ज्ञानियों तथा ज्ञानदाताओं के सम्पर्क तथा शिक्षा के अभाव के कारण ही उनकी यह दुर्दशा है। अमरीका के अज्ञानी लोग यूरोपवासियों के सम्पर्क और शिक्षा के कारण ही आज ज्ञान-विज्ञान के ठेकेदार बन गये हैं। यूरोप को यूनानियों से और यूनानियों को आर्यावर्त अर्थात् भारत के वेदवेत्ताओं से ज्ञान की प्राप्ति हुई। ज्ञान से अजस्र प्रवाह वेद की अमृत बूंदों का स्रोत स्वयं अनन्त परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य कौन हो सकता है। संसार के सभी मनुष्यकृत ग्रन्थ विशिष्ट समाजों या समूहों की सम्पत्ति बन कर रह गये, क्योंकि वे देश, काल और परिस्थिति की सीमाओं में आबद्ध हैं। उनमें से एक भी वैदिक वागंमय के सदृश सम्पूर्ण मानव समाज के लिए सर्वहितकारी और सर्वमान्य उपदेश प्रस्तुत करने में समर्थ नहीं हो सका।

एकमात्र वेद ही ऐसा ग्रन्थ है, जिसमें उपदेश किसी एक देश अथवा समूह के लिए नहीं, अपितु संसार के प्रत्येक स्थान पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान रूप से आत्मोन्नति, सामाजिक उत्थान, शान्ति, सद्भाव, सदाचार, लौकिक सुख तथा पारलौकिक आनन्द का मार्ग प्रशस्त करते हैं। राग, द्वेष, अहंकार, स्वार्थ, संघर्ष, शोषण तथा विभिन्न प्रकार के वादों-प्रतिवादों और समस्याओं से त्रस्त, विध्वंस के कगार पर खड़ी मानवता की रक्षा के लिए वैदिक शिक्षा तथा वेदानुकूल आचरण ही एकमात्र उपाय है। स्वयं जर्मन विद्वान् मैक्समूलर लिखता है, ''मेरा यह दावा है कि संसार में मनुष्य मात्र के स्वाध्याय के लिए कोई पुस्तक इतनी आवश्यक नहीं जितना वेद है।'' वास्तव में यही एक ऐसा ज्ञान है जिसमें सृष्टिक्रम के अनुकूल, प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध, पवित्रात्मा आप्त पुरुषों के द्वारा मान्य तथा तर्कसिद्ध बुद्धिगम्य तथ्यों पर आधारित, मानव मात्र के लिए हितकारी कथन समाविष्ट हैं।

मानव जीवन की ही नहीं, जड़-चेतन सम्पूर्ण जगत् के विविध पक्षों की सूत्रबद्ध विवेचना करने वाले इतने बृहत् और विस्तृत ज्ञान-कोष का अनावरण किसी एक या दस-बीस विद्वानों के वश की बात नहीं। इस कार्य का सम्पादन सर्वशक्तिसम्पन्न और सर्वज्ञ विधाता के द्वारा ही सम्भव है। यजुर्वेद में परमात्मा की वाणी का संकेत है, ''यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्याम् शुद्राय चार्याय च स्वाया चारणाय च।'', अर्थात् जिस प्रकार मैं (ईश्वर) इस कल्याण करने वाली वेदवाणी का उपदेश ब्राह्मण, क्षत्रिय, शुद्र और वैश्य वर्णों के लिए तथा अपने उपासकों और अन्य सबके लिए करता हूँ, वैसे तुम सब भी करो। ईश्वरीय वाणी होने से ही वेदों को अपौरुषेय कहा गया है। इसका यह अर्थ नहीं कि परमेश्वर ने साकार होकर चार ऋषियों के हाथों में ये पुस्तकें थमा दीं, अथवा क्रमिक अन्तराल से वह इनके पन्ने या नियम पट्टिका उनके समीप फेंकता गया। ईश्वरीय वाणी को अन्तरीकृत करने वाले ऋषिगण मंत्रों के स्रष्टा या निर्माता नहीं थे। वे मन्त्रद्रष्टा थे। वेद तो वह दिव्य वाणी है जो परमेश्वर की न्याय योजना से असीम से निकल कर अन्तरिक्ष में कम्पन करती हुई, शब्द तरंगों के रूप में उन मनुष्यों के अन्तःकरण में प्रविष्ट हो गई, जिन्होंने स्वयं को पूर्वसंचित श्रेष्ठतम कर्मों के आधार पर पहले से ही इस अलौकिक ज्ञान का पात्र बना रखा था। ये पुण्यात्मा ऋषि ईश्वरीय शिक्षा को हृदयंगम करने वाले दिव्य द्रष्टा थे, जिनके मानस निर्झर को अजस्र प्रवाह मानव मस्तिष्क के प्रत्येक अंचल को सींचता हुआ, तब तक आगे बढ़ता रहेगा, जब तक इसके मूल स्रोत की इच्छा से सृष्टि का मूर्त स्वरूप ही तिरोहित न हो जाये, जिसके साथ ही यह ज्ञान अपने स्रोत के गर्भ में विलीन हो जायेगा। शब्द तरंगे पुनः अन्तरिक्ष में संकुचित होकर अश्रुत हो जायेंगी, किन्तु लुप्त नहीं होंगी, क्योंकि पुनः सृष्टि की उत्पत्ति के साथ इस दिव्य शब्द समूह को, इस कल्याणी वाणी को सर्वज्ञ सरस्वती की इच्छा से मन्त्रद्रष्टा ऋषियों की पुण्यात्माओं में प्रकाशित होना है।

एकमात्र वेद ही ऐसा ग्रन्थ है, जिसमें उपदेश किसी एक देश अथवा समूह के लिए नहीं, अपितु संसार के प्रत्येक स्थान पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान रूप से आत्मोन्नति, सामाजिक उत्थान, शान्ति, सद्भाव, सदाचार, लौकिक सुख तथा पारलौकिक आनन्द का मार्ग प्रशस्त करते हैं। राग, द्वेष, अहंकार, स्वार्थ, संघर्ष, शोषण तथा विभिन्न प्रकार के वादों-प्रतिवादों और समस्याओं से त्रस्त, विध्वंस के कगार पर खड़ी मानवता की रक्षा के लिए वैदिक शिक्षा तथा वेदानुकूल आचरण ही एकमात्र उपाय है। स्वयं जर्मन विद्वान् मैक्समूलर लिखता है, ''मेरा यह दावा है कि संसार में मनुष्य मात्र के स्वाध्याय के लिए कोई पुस्तक इतनी आवश्यक नहीं जितना वेद है।'' वास्तव में यही एक ऐसा ज्ञान है जिसमें सृष्टिक्रम के अनुकूल, प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध, पवित्रात्मा आप्त ऋषियों के द्वारा मान्य तथा तर्कसिद्ध बुद्धिगम्य तथ्यों पर आधारित, मानव मात्र के लिए हितकारी कथन समाविष्ट हैं।

- 3/ पंत विहार - दिल्ली रोड, सहारनपुर-247001

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह 1939 की स्मृति

आर्य समाज का विजय पर्व

भारतीय संघ में हैदराबाद राज्य का विलीनीकरण और आर्य समाज की भूमिका

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

वेद के अनुयायी और उसके प्रचारकों को सदैव ही संघर्ष करना पड़ा। इसी संघर्ष की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी 'हैदराबाद आर्य सत्याग्रह' (1939) है। कतिपय विद्वान् इस महान् एवं सफल सत्याग्रह को "हैदराबाद में धर्मयुद्ध" नामक संज्ञा से भी सम्बोधित करते हैं। वस्तुतः यह हमारे गौरवपूर्ण इतिहास का अति महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसे पढ़कर हमारी आने वाली पीढ़ी गर्व से आत्माभिमान अनुभव करेगी।

हैदराबाद (तत्कालीन दक्षिण) आर्य सत्याग्रह वस्तुतः एक युद्ध था जिसे हैदराबाद राज्य में आर्य समाज के अधिकारों और वैदिक धर्म के प्रचार स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए लड़ा गया था। प्रामाणिक तथ्यों के अनुसार आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली द्वारा निरन्तर छः वर्ष तक वैध उपायों से इस समस्या के हल का प्रयत्न किया गया था, किन्तु जब ये सारे उपाय निष्फल हो गए, तब निजाम सरकार ने आर्य समाज को सत्याग्रह करने के लिए बाध्य कर दिया।

आर्य समाज के इस निर्णय से अन्य राजनैतिक दलों तथा साम्प्रदायिक संस्थाओं को बहुत पीड़ा हुई। इन्हें अपना नेतृत्व छिन जाने की वेदना सताने लगी। इस कारण आर्य समाज के इस सत्याग्रह को साम्प्रदायिकता का आवरण देने का असफल प्रयास किया। यह कटु सत्य है कि तुष्टीकरण ही इस देश के विभाजन का एक मात्र कारण सिद्ध हो चुका है। सत्यमेव जयते नानृतम्' और असत्यमेव न जयते' के मूल सिद्धान्त को मानने वाले उस आर्य समाज के सम्मुख न तो तुष्टीकरण रूपी नाग अपना फन ऊँचा कर पाया और न गिरगिट की तरह रंग बदलने वाली कुटिल चाल ही सफल हुई। इतना ही नहीं इन्हीं तत्वों के कारण आर्य समाज के प्रति लोगों की सहानुभूति को घटाने के स्थान पर बढ़ाया ही। आर्य समाज के नेताओं ने प्रारम्भ से ही इस बात को स्पष्ट कर दिया था कि यदि किसी हिन्दू राज्य में आर्य समाज पर इसी प्रकार की आपत्ति आती है जिस प्रकार की निजाम राज्य में आई थी, तो वे वहां भी इसी उपाय अर्थात् सत्याग्रह धर्म युद्ध का आश्रय लेते आर्य समाज की घोषणा ने समाज और राष्ट्र के सम्मुख एक स्पष्ट और स्वच्छ विशाल मार्ग प्रस्तुत कर दिया। आर्य समाज ने दाहिने हाथ से कर्म किया और बाएं हाथ में विजय श्री अपनी शोभा बढ़ाने लगी।

हां, जब आर्य समाज की सामनीति जब छः वर्ष पश्चात् भी सफल न हुई तब भी आर्य समाज निराश न हुआ। उन्होंने सर्वप्रथम समस्त आर्य जगत् की सम्मति ज्ञात करने के लिए दिसम्बर, 1938 के अन्तिम सप्ताह में शोलापुर में आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का आयोजन इस 'नीति' के अनुसार था कि सम्भवतः निजाम सरकार के रवैऐ से आर्य समाज को सत्याग्रह न करना पड़े, किन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ और उस निजाम की पूंछ पूर्ववत् टेढ़ी ही रही। अन्ततः आर्य सम्मेलन शोलापुर को अपने समस्त निश्चयों के अनुसार सत्याग्रह की घोषणा करना पड़ी। इसके सर्वप्रथम सर्वाधिकारी श्री महात्मा नारायण स्वामी जी बनाए गए। इन समस्त निश्चयों में निश्चय क्र. 3 में स्पष्ट कहा गया था - 'राज्य अथवा कर्मचारियों को न तो तबलीग शुद्धि मतान्तरण में भाग चाहिए न उसे प्रोत्साहन करना चाहिए। न जेलों में हिन्दू कैदियों तथा स्कूलों में हिन्दू बच्चों को मुसलमान बनाया जाना चाहिए और न हिन्दू अनाथ, मुसलमानों के सुपुर्द किए जाने चाहिए।" (सन्दर्भ - आर्य डायरेक्टरी, 1942, प्र. 213)

इस विशाल सत्याग्रह के संचालन हेतु 'सत्याग्रह समिति' नियत की गई। चूंकि इस आन्दोलन के सम्बन्ध में मिथ्या और भ्रमपूर्ण बातें फैलाई जा रही थीं, इसलिए उद्देश्य की पवित्रता के लिए सत्य और अहिंसा का विशुद्ध रूप से पालन अत्यावश्यक कहा गया।

धर्म युद्ध की प्रथम आहुति

- निश्चयानुसार पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने दिनांक 29 अगस्त, 1939 को कतिपय सत्याग्रहियों के साथ हैदराबाद राज्य में प्रवेश किया। उन्हें प्रथमतः पकड़कर पुलिस निजाम राज्य के बाहर कर गई। किन्तु जब स्वामी जी ने पुनः वहां जाकर सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया, तब उन्हें पकड़कर एक साल के कारावास का दण्ड दिया गया। बस फिर क्या था, दावानल की भांति पूरे देश में जोश फैल गया और जनता बड़े से बड़े त्याग के लिए तैयार हो गई। आर्य समाज भी अंगड़ाई लेकर युद्ध के लिए ताल ठोंककर तैयार हो गया। सत्याग्रह के रहस्य को समझकर मार्च, 1939 में निजाम सरकार की ओर से समझौते की चर्चा प्रारम्भ हुई, किन्तु 9 अप्रैल, 1939 में शोलापुर में अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक हुई। इधर निजाम सरकार पीछे हट गई, इस कारण इसमें कोई विशेष गति नहीं आई।

उधर निजाम सरकार का दमन चक्र प्रबलता से घूमने लगा। ज्यों-ज्यों दमन चक्र बढ़ने लगा, त्यों-त्यों सत्याग्रह में उग्रता और तीव्रता बढ़ने लगी। इधर तुष्टीकरण की नीति वाले दलों ने इसके सम्बन्ध में अनेक भ्रांतियां फैलाना शुरू कर दीं। किन्तु जनता ने आर्य समाज की न्याय प्रियता, सत्यतापरक अहिंसा के मूल्य का आकलन करना शुरू किया, इस कारण 'तुष्टीकरण' की कुचालें निष्प्रभावी हो गई। अब इस धर्म युद्ध ने और भी व्यापकता प्रकट कर ली। कहते हैं - यह युद्ध इतना व्यापक और इतना प्रसिद्ध हो गया था कि उन दिनों देश की सार्वजनिक हलचलों में इसके सिवा और कोई हलचल सर्वोपरि न थी। सभी भाषायी तथा आंग्ल पत्रों में इस युद्ध के अतिरिक्त कोई चर्चा न थी। यह ध्यान रखने का तथ्य है कि देश के अग्रणियों की चिन्ता का कोई विषय था तो केवल यह युद्ध था।

यह युद्ध और इसकी चर्चा भारत की सीमा तक ही सीमित न रही वरन् समुद्र पार पार्लियामेण्ट के भवनों तक जा पहुंची।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आज्ञाओं और निर्देशों को आर्यजनता ने बड़ी तत्परता और सम्मान के साथ ग्रहण किया। यह एक ऐतिहासिक वस्तु बन गई। जब युद्ध अपने चरम पर था, उस समय 2,000 सत्याग्रही शिविरों में पड़े हुए आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। इनमें हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान तथा ईसाई बन्धु थे। हमारे अनुशासन एवं संयम की सभी आंग्ल पत्र तथा भाषायी पत्र भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। विशेषकर हिन्दू जनता ने आर्य समाज की विपत्ति को अपनी विपत्ति समझा और उसके निवारणार्थ उन्होंने आर्य समाज तथा आर्य समाजियों के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाया और ऐसा कौन सा त्याग था जो उसने इस अवसर पर न किया हो।

'असत्यमेव न जयते' के अनुसार आर्य समाज रूपी श्रीकृष्ण का पांचजन्य शंख एक बार पुनः ध्वनित हो उठा और उसने विजय की घोषणा की। निजाम सरकार ने आर्य समाज के इस सत्याग्रह के सम्मुख घुटने टेक दिए और उसने 'सुधारों' की घोषणा की। यह घोषणा 20 जुलाई सन् 1939 को की थी। इसके पूर्व दिनांक 17 जुलाई, 1939 को निजाम सरकार ने अपना निर्णय प्रकट कर दिया था।

इस सत्याग्रह में कुल 10,579 सत्याग्रही जेल गए थे। इसके अतिरिक्त 2,000 सत्याग्रही वे थे जो 8-8-1939 से पूर्व केन्द्रों में पहुंच गए थे और आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे।

इस प्रकार आर्य समाज द्वारा छेड़ा गया यह धर्म युद्ध जो कि अज्ञान, अन्याय और अभाव के विरूद्ध प्रारम्भ हुआ था, परमात्मा की कृपा सत्याग्रहियों के तप-त्याग तथा महान बलिदानियों के कारण सुखद अन्त के रूप में विजय श्री को प्राप्त कर सका। इन सभी श्रेष्ठ आत्माओं के प्रति आभार तथा प्रणाम।

- 'सुकिरण' अ-193, सुदामानगर, इन्दौर, (मध्य प्रदेश)

हैदराबाद के आर्य शहीदों को

श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं हम, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान।।
परिवारों के सुख को त्यागा, देश के अनेकों वीरों ने।।
कष्ट अनेकों सहन किए, पर धर्म न छोड़ा वीरों ने।।
ऐसे सभी धर्मवीरों के आगे शीश झुकाते हैं।
उनके उत्तम गुणगान को, हम निज जीवन में लाते हैं।।
अमर रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनायेगा फिर वीर जाति को निश्चय से।।
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि कोटि हो वीर।
धर्म देश हित जोकि खुशी से प्राणों की आहुति दे वीर।।
जगदीश को साक्षी जान कर यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिन्ह पर चलने का व्रत करते हैं।।
सर्व शक्ति दे बल ऐसा, धीर-वीर सब आर्य बनें।
पर उपकार परायण निश दिन शुभ गुणकारी आर्य बनें।।

धर्मवीर नामावली

श्यामलाल जी, महादेव जी, राम जी श्री परमानन्द।
माधवराव, विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द।।
स्वामी सत्यानन्द, महाशय मलखाना, श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश, रामनाथ जी पांडुरंग, श्री शान्ति प्रकाश।।
पुरुषोत्तम जी, ज्ञानी लक्ष्मण राव, सुनेहरा वैंकटराव।
भक्त अरुणाराम जी, नन्हूं सिंह जी, गोविन्द राव।।
मदन सिंह जी, रतिराम जी, मान्य सदाशिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटेलाल, अशर्फीलाल तथा श्री फकीर चन्द।।
माणिकराव, भीमरावजी, महादेव जी, अर्जुनसिंह।
सत्यनारायण, वैजनाथ, ब्रह्मचारी दयानन्द, नरसिंह।।
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन सब ही वीरों धीरों का।।

वंचित, शोषित तथा उपेक्षित वर्ग को जोड़ने का संकल्प लेकर श्रावणी पर्व (वेद प्रचार सप्ताह) हर्षोल्लास के साथ समारोह पूर्वक मनायें

वेदों का जीवन दर्शन ही आज के जीवन तथा जगत को सत्य, धर्म, न्याय, सुख-शांति और सच्चा आनन्द दे सकता है

– स्वामी आर्यवेश

जीवन निर्माण में स्वाध्याय का महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक साहित्य स्वाध्याय की महिमा का बखान करते नहीं थकते। चारो आश्रमों में स्वाध्याय करने का विधान है। वेद का प्रचार तथा वैदिक मूल्यों का स्थापन आर्य समाज की गतिविधियों में प्राथमिक महत्व रखते हैं। वेदों की शिक्षा और विचारधारा से व्यक्ति और चरित्र का निर्माण होता है तथा वेदों का जीवनदर्शन ही आज के जीवन तथा जगत को सत्य, धर्म, न्याय, सुख, शांति और सच्चा आनन्द दे सकता है। इस वर्ष 7 अगस्त, 2017 को रक्षा बन्धन तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी 15 अगस्त, 2017 को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।

श्रावणी पर्व के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि वेद प्रचार सप्ताह को केवल पारम्परिक रूप में औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ होने वाला नहीं है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सच्चाई व ईमानदारी से वेद प्रचार के कार्यों को सर्वोपरि मानकर उसके प्रचार-प्रसार में समय लगायें। यदि वेद प्रचार सप्ताह को उत्साह पूर्वक अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित करके मनायें तथा कुछ विशेष अनुकरणीय कार्य करें तो हम लोगों को प्रभावित भी कर सकते हैं तथा ज्ञान गंगा घर-घर पहुंचा सकते हैं।

श्रावणी पर्व अर्थात् रक्षा बन्धन से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक सार्वजनिक स्थलों, पार्कों अथवा बाजारों में अलग-अलग स्थानों पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें। आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त क्षेत्र के प्रबुद्ध व्यक्तियों को विशेष रूप से आमन्त्रित करें तथा उन्हें यजमान भी बनायें। सामान्य जनों में अपने उद्देश्यों व सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार करें तथा उन्हें अपने विशेष आयोजनों तथा साप्ताहिक सत्संगों में आमंत्रित करें। यज्ञोपरान्त जलपान तथा ऋषि लंगर अधिकाधिक लोगों में वितरित करें।

यज्ञ के अवसर पर आर्य विद्वानों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के उपदेश अवश्य आयोजित किये जायें जिससे जन सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार विमर्श या मार्ग दर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियां या लघु सम्मेलन आयोजित करें।

वेद कथा का आयोजन रात्रि में आर्य समाज मंदिरों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर अवश्य किया जाये जिससे वेद की शिक्षाओं का लाभ धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सके।

क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डाक्टर वकील, इंजीनियर तथा विशेष रूप से युवा वर्ग को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य भेंट स्वरूप प्रदान करें। अनजान और अनभिज्ञ लोगों को वेद के ज्ञान के दायरे में लाना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिए।

आर्य समाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके आत्मावलोकन अवश्य करें कि क्या हमारे आर्य समाज की गतिविधियां सन्तोष जनक हैं? क्या इससे और अधिक कुछ किया जा सकता है? इस पर विचार करें तथा कार्यरूप में परिणत करें।

वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत श्रावणी पर्व से लेकर श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक प्रतिदिन प्रातः प्रभात फेरी (जन-जागरण) निकालने के विशेष प्रयास किये जाने चाहिएं जिसमें बच्चे, युवा, वृद्ध, नर-नारी सभी वर्ग के लोग उपस्थित हों तथा भजनों, नारों और जगह-जगह पर संक्षिप्त रूप से आर्य समाज के मन्तव्यों तथा सिद्धान्तों का प्रचार किया जाये तो अति उत्तम होगा।

स्वामी जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड, नारी उत्पीड़न के ऊपर सभी आर्य समाजों में गम्भीर चर्चा होनी चाहिए और इस पर कार्य योजना भी बनानी चाहिए। अन्य कार्यक्रमों के

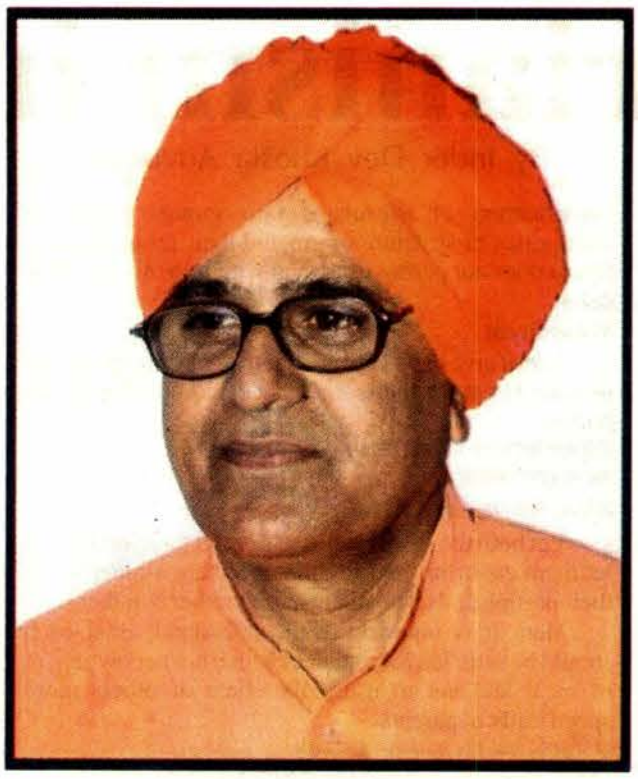

अतिरिक्त जो वंचित, शोषित जन हमसे दूर हुए और अलग-थलग पड़े लोग हैं उनको साथ मिलाने की आज बहुत आवश्यकता है। हमारा यह दायित्व बनता है कि हम आर्य समाज में तो यज्ञ करें ही लेकिन उन बस्तियों में भी जाकर यज्ञ करें तथा सहभोज का आयोजन करें जहाँ इस प्रकार के लोग निवास करते हैं। जात-पात उन्मूलन की आवश्यकता सबसे अधिक है और गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर ही हमें चलना चाहिए। वंचित, शोषित व उपेक्षित वर्ग को जोड़ना इस श्रावणी पर्व पर विशेष अभियान की तरह चलाया जाना चाहिए। उपेक्षित वर्ग को आर्य समाज में आमंत्रित करके तथा उनका सम्मान करके भी हम जात-पात पर निर्णायक प्रहार कर सकते हैं।

एक सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य जो हम सबको अवश्य ही करना चाहिए वह है कि ऐसी छवि बनाना जिससे लोग कहें कि हाँ यह आर्य समाजी हैं। हमें अपने कार्यों से चरित्र से, व्यवहार से, अपने पास-पड़ोस के लोगों पर विशेष छाप छोड़नी चाहिए और इसके लिए अपने पास-पड़ोस और गली-मुहल्ले के लोगों के घरों में दुःख तथा सुख में बराबर का भागीदार बनना होगा। उनकी सहायता करनी होगी। उनके पारिवारिक कार्यक्रमों में आर्य समाज के सदस्य के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर यथाशक्ति सहयोग प्रदान करना चाहिए। लोगों से मेल-मिलाप और सहयोगी प्रवृत्ति के द्वारा हम अपने साथ लोगों को जोड़ पायेंगे और जब लोग जुड़ेंगे तभी तो हम उन तक अपनी बात पहुँचा पायेंगे। इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

श्रावणी वाले दिन विशेष यज्ञ के अवसर पर यज्ञोपवीत धारण करना तथा परिवर्तित करना विशेष रूप से सम्पादित किया जाये तथा यज्ञोपवीत क्यों धारण करना चाहिए तथा उसकी महत्ता के विषय में आम जनता को परिचित कराना न भूलें।

इसी दिन हैदराबाद सत्याग्रह के धर्म युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जानी चाहिए जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिये। रक्षा बन्धन पर्व के वैदिक स्वरूप का प्रचार तथा गुरुकुल जैसी संस्थाओं को सहायता देना तथा संस्थाओं की रक्षा का व्रत विशेष रूप से लिया जाना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि इस वेद प्रचार सप्ताह के आयोजन में युवाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करें। क्योंकि सुप्त पड़ी युवा पीढ़ी को नव-जीवन देने तथा राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने तथा अश्लीलता, नशाखोरी एवं शारीरिक, मानसिक, आत्मिक आरोग्यता को दूर करने के लिए युवाओं का संस्कारित होना अत्यन्त आवश्यक है। उनमें चरित्र निर्माण के प्रति जागरूकता पैदा करना, अध्यात्म, योग साधना और सद्मन्तव्यों के प्रति रुचि जाग्रत करना तथा जीवन में आत्मानुशासन के प्रति प्रतिबद्धता लाना तथा सात्विकता को जीवन में स्थान देना जैसे गुणों को मुखरित करके हम उन्हें आर्य समाज से जोड़ सकते हैं और उनको नव-जीवन प्रदान कर सकते हैं, अतः इस बार अधिक से अधिक युवा हमारे कार्यक्रमों में आने चाहिए।

वेद प्रचार सप्ताह के दिनों में प्रतिदिन स्वच्छता अभियान चलायें अपने पास पड़ोस के क्षेत्रों में स्वयं सफाई करें तथा अन्य व्यक्तियों को प्रेरित करें कि वे अपने पास-पड़ोस के क्षेत्र को सदैव स्वच्छ रखें।

स्वामी जी ने देश-विदेश में फैल रहे पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के लिए इस अवसर पर अधिक से अधिक वृक्षों को लगाने का भी आह्वान किया उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक पौधा अवश्य रोपित करे और पर्यावरण के सम्बन्ध में लोगों में जागृति लाने का प्रयास करे।

हम आर्य समाजी इस अवसर पर कुछ अलग करके दिखायें जिससे आम जनों में आर्य समाज की एक अलग छवि निर्मित हो और लोग हमसे प्रभावित हों। यदि वेद प्रचार सप्ताह के दौरान कुछ नये व्यक्तियों को हम आर्य समाज से जोड़ पायें तो यह वेद प्रचार सप्ताह मनाना सफल माना जायेगा।

15 अगस्त, 2017 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति तथा भगवान श्री कृष्ण जी के वैदिक स्वरूप का दिग्दर्शन विस्तृत रूप से आम जनता को कराया जाये जिससे भगवान श्री कृष्ण के सच्चे स्वरूप का ज्ञान लोगों को प्राप्त हो तथा उनके बारे में फैली हुई भ्रांतियां दूर हों।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा सत्य धर्म का प्रचार करना है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है अतः वेद मय होकर दयानन्द के भक्तों आगे बढ़ो और वेद प्रचार करो।

इस श्रावणी पर्व पर हम सब आर्यों को संकल्प लेना चाहिए कि ईमानदारी व कर्मठता से हम आर्य समाज का कार्य करेंगे तथा सक्रिय होकर आगे आयेंगे एवं नये जोश के साथ जन-जागरण का कार्य प्रारम्भ करेंगे।

आर्य समाज तथा सार्वदेशिक सभा की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सार्वदेशिक सभा के मुखपत्र "वैदिक सार्वदेशिक" के स्वयं ग्राहक बनें तथा अन्य व्यक्तियों को ग्राहक बनाने का प्रयास करें। "वैदिक सार्वदेशिक" का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा आजीवन शुल्क 2500/- रुपये मात्र है। अपने आर्य समाजों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूचना चित्र सहित प्रकाशित करने के लिए अवश्य भेजें जिससे आर्य जगत की गतिविधियों का प्रचार-प्रसार हो तथा अन्यों को प्रेरणा प्राप्त हो सके।

– प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2

यस्यच्छायाऽमृतम्

विद्यावाचस्पतिः श्री रामदत्त शास्त्री
पक्की सराय, अनूपशहर, बुलन्दशहरम् (उ. प्र.)

वैदिकवाङ्मयं हि नाम मानव मात्रस्य कृते सुखशान्तिसमृद्धिपरिपोषकं पुष्टिवर्धनं मनोविकारापहारि सद्विचारसार समुत्पादनपरं शश्वदात्माभ्युदयकारि जीवनज्योतिरादीप्तिकरम्। वैदिकवाङ्मयतरुर्हि नितरामच्छितो विततोऽहर्निशघनच्छाया प्रदायी मधुरफलवान्, समभ्युपेतपरिश्रात्तजनमानस शंकरोऽविरतविततितापपापहारी जगज्जीवातुरूपः। साम्प्रतम् अस्मद्देशे नवयूनां नवयुवतीनां च करेषु नापतति शमं शान्तिप्रदं सून्नतविचारवर्धकं तादृशं मङ्लमयं स्वस्थं सत्साहित्यम्, सदधीत्यनवतरुणा नवतरुण्यश्च्याविरतं कलुषितविचारधारानिमग्नाः सततं श्रृंङ्गारभावजागरूकाः कामयमाना अपि सत्पथाध्वनीना न भवन्ति, प्रत्युत कलुषितभावभरितसाहित्या धीतितत्परास्तथाविधाऽविरतचलचित्रजगदर्शन संदीप्तकामवासनाऽनलास्तथा विधेष्वेवानिशं विचारेषु ब्रुडित मानसा न कथमपि जीवनाभ्युदयाध्वानं लभन्ते।

सत्यस्य पन्था वितो देवयानः

अयि भारतीया भ्रातरः! यदि यूयं वास्तविकं तथ्यं सुखमासदयितुं कामयध्वे तर्हि त्वरया विहाय विविधान् अवद्यानध्वनः कल्मषान्, भूयो वैदिकमार्गानुररीकुरुत। स एव सारभूतः सत्यो देवयानो महान् पन्था।: इन्द्रियाणां दमनेन साधुना चेतसा चिन्तयत जन्ममरणापवर्गाय जीवनवैशद्याय वैदिकसंस्कृतिसम्पदम् अविरामोन्नतिपरां कापटिकजनजालनिर्मलगुर्वीम्। एष एव मार्गः सच्चिदानन्दस्वरूपस्य प्रभोः सम्मेलनाय सांसारिक कष्टकलापापहाराय परमशान्तेरुपलब्ध्ये च।

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति

भगवती श्रुतिः स्वयं वैदिकसाहित्यस्य संस्तवं कुरुते। ऋग्यजुस्सामाथर्वरूपं देवस्य परमात्मनः काव्यं कवित्वरूपं सार्वकालिकम्, यत्कदापि न जीर्णं भवित, न च म्रियते। एतत्काव्याध्ययनाध्यापनाभ्यामेव परमां शाश्वतिकी च शांति यूयं यास्यथ। अयमेव सुखावहो दुःखापहाश्च मार्गः

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

भगवदाराधनं हि जीवनस्य परमं महत्त्वम्। यदि जगति विविधानि अनीकानि विजित्य विविधान् अरीन् संमर्ध, धन-धान्य विविधालङ्कारसम्भारभूतिं भव्यभावनायोगान् आसाद्य प्रचुरां मेदिनीं च विजित्य तादृशमानन्दम् उपलब्धासि सर्वमिदं क्षणिकं विनाशि च सुखम्। यद्येषु तथ्यं सुखमभविष्यत् तर्हि कथं धनधान्य पूर्णजीवनाः जना आरण्यकाः संजाताः। सकलान् सांसारिकरागान् सांसारिक जनदृष्टौ सुखागारान् विहाय कथ मुनित्वमापन्नाः। कथं जनकादयो राजर्षयः स्वीयां समृद्धां राज्यसमृद्धिं परिहाय विपिनवासिनोऽभूवन्। 'नाल्पे सुखमस्ति भूम्नि सुखम्।' यो वै भूमा तत् सुखम्।' 'भूमा वै परमैश्वरः।

यजुंषि प्रतिपादितम्

— भारतोदय से साभार

Vegetarianism in Vedas

By Inder Dev Khosla Advocate

Definition

Vegetarianism is the theory and practice of living solely on vegetable foods, including milk, to the exclusion of all sorts ot meat. Anything derived from, consisting of plants or plant material is known as Vegetable. The word vegetable is derived from the latin word Vegetabilis which means enliving or to enliven viz to give live, vituality, energy etc. thus vegetarianism signifies that practice by adopting which one is activated or becomes vigorous. Hence it is clear that consumption of vegetables is an essential thing and source of life and in view of that nature has produced it in abundance never to be exhausted.

Reasons for Vegetable diet

Vedas lay great stress on vegetable diet for human consumption since it contains all the important constituents for upkeep of health & body building. This fact is fully supported by modern dieticians and scientists. They advocate that vegetable diet contains lesser fatty elements and certain fibers which are useful in elimination of matter struck up in the intestines. In fact most of the vegetables have medicinal values. Plant is called (तरु) Taru in Sanskrit language which means that which helps in overpowering or curing diseases (तरन्ति आपद इति तरुः)

Amar Koshal. Vegetable Kingdom is also called dravya. (द्रव्याणि पुनरोषधयः) it has medicial value. The fact is repeated in the following statement also (वनस्पतयो वृक्षवीरन्ध औषधयइति) Even those who take meat are advised by doctors to consume in abundance Salad, Vegetable Soups and fruits etc. to remove the lacuna which exists in diet of meat.

Relations of body and gross elements

This universe is constituted to main five gross elements i.e. (प्रापः) water, (तेज) heat, (वायु) air, (आकाश) cosmos and (पृथिवी) earth. So also all the bodies of living beings are constituted of these elements. Thus there is a relation in between the human body and the products of earth and other elements. Vegetables are also constituted of these elements.

भवन्तो हि शरीरे भावविशषतापन्तो लोके।
यावन्तो लोके तावन्तो शरीरे बुधा एवमेव द्रष्टुम् इच्छन्ति।। (Charak)

Whatever there is in the world, the same elements are found in vegetables. Hence by taking vegetable diet human body gets strength in these five elements of which it consists of. There are different kinds of plants and vegetables and each has special properties of their own. According to our vedic science there are three predominant (दोष) defects (कफ) Kaf, (वात) wind and (पित्त) excess of heat in living bodies and these doshas (दोषा) can be cured or. put in a balanced state through administraton of that particular vegetable or its products which is useful in each individual case. We have already stated above that the vegetables have medicinal values of their own. One of the study of vegetable kingdom is called Taxonomy, chich is itself a complete independent sabject. It is that branch of biology which deals with the classification of organisms into groups based on similarities of structure origin and their properties etc. Space does not permit us to deal with it in this article in detail.

What to eat

Vedas give hints here and there regarding the fact as to what to eat for the maintenance and up keep of our bodies.

ब्रीहिमत्तं यवत्तमपो माषमधो तिलम्।
एष वा भागो निहितो रत्न धेयाय दन्तौमा।।
हिसिष्ट पितरं मातरं (Ath 6 140.2)

Let both the sets of teeth eat rice, let them eat barley, let them eat beans and sesame, the share allotted to be their portion and let not them harm mother & father.

Here it is noteworthy to understand that each should be satisfied & contented which his/her own share of meal and not to usurp the share of others more specifically of parents—

सं सिंचामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्
संसिका अस्माकं वीरा ध्रवा गावो मयि गोपतौ (Ath. 2.26.4.)

I pour together the milk of cow with the ghee which blends stength and platability. Thus our children be full

of strength & vigour & let there be herd of cows to yield milk.

पुष्टि पशुना परि जग्रमाह चतुष्पदा द्विपदा यच्चधन्यम्
पयः पशुना परिजागगाह चतष्पदो द्विपदां चच्चा धान्यम् (Ath 19.31.5)

May the creater, the supreme Being vouchsafe us the milk of Cows, Sheep, other animals yielding milk so also other useful animals & the juice of herebacious plants. We may obtain in abundence weath of quadrupeds, bipeds and whatever is within the range of conrns.

पयो धोनुना रसमोषधीना जवयर्वता कवयोय इन्वध
शग्या भवन्तु मरुतो नः रयोनास्ति नो मचन्त्वहसः (Ath 4.27.31)

Here maruti means all those who are capable of running and are souce of yeilding milk. May there be sap in herbs and speed in horses. May these powerful ones (maruti) be auspacious for us. May these be capable of relieving us from pain, grief of from the troubles.

Protection of animals

या पौरुषैयेण क्रविषा समइक्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।
यो प्रधन्याया मरति क्षी रमग्ने तेषा शीर्षाणि हसापि वृक्ष्च (Rig. 10.87.16)

He who eats meat or who consumes the meat of horse or other animals or deprives other of the milk of cows etc. by killing them—such a brute should be beheaded.

य आमं मसिमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रवि।
गर्भान् खदयन्ति केशवास्तानितो नाशवामसि।। (Ath. 8.6.23.)

Whosoever takes raw or prepared meat or takes egg should not be allowed to do so and should be taken to task if he continues this habit.

प्रियः पशना भ्यासम् (Ath. 17.4) One Should endear himself to animals

पशून् ये सर्वान् रक्षन्ति (Ath. 19.48.5) Protect the animals.

न मासमश्नीयात (Taytriya 1.1.9 (7.8) One should not eat meat.

गामा हिंसी अजा मा हिंसी अप्रवि मा हिंसीरिम् (Yaju 13.43)
मा हिंसी द्विर्पाद पशुम् मा हिंसो रकेशफ (Yaju. 13.4)
पशु मा हिंस्पात् सर्वा भूतानि (Yaju 13. 48)

In all the above three mantras, it is clearly stated that animals or birds whether bipeds or quadruped should never be killed. Nothing can be more clear than this to prohibit killing of animals and consequently of taking their meat either raw or cooked. Anyone who interprets any vedic mantra or vedic literature justifying taking of meat is deliberately misinterpreting the same to suit his/her purpose. In view of these mantras there is no scope of doubt about not to kill an animal etc.

प्राणीताश्वान् हितं जयाथ स्वस्तिवाहं रधमित्कृधुध्वम्।
द्रोणारावमतरमचक्रम सत्रकोश सिंचता नृपणाम् (Rig. 10.101.7)

In the above mantra it is clearly stated that one should take corns for meals which are useful in giving strength to the body.

पशुन् ये सर्वान रक्षन्ति ते न आत्मसु तेः पशुषु जाग्रति (Ath. 19.48.5)

Those who keep awake in the night for vigilence purposes their main object is to protect the lives of men and animals.

Principle of non-violence

One of the cardinal principles of Vedas and the vedic literature is to avoid violence in any form.

अहिंसा परमोधर्मा, महंक्रत जातिदेश कालस्मयानीच्छन्ताः।
सर्व भौमा महावतंम (Yog darshan 2.31)

Non-violence is the greatest virtue. In the light of that how it is possibly justified that Vedas allow meat eating.

We end this subject with the vedic philosophy contained in Isho Upnishda & yajur Veda wherein it is stated that one should consider all living beings like oneself (आत्मसमान)

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यत्मैवा द्विजानतः तत्र को मोहः कः शोक (Yaju. 40.7)

One who considers all living being like onself, there should be no sorrow. Since nobody would like to hurt himself what to say of killing how would he like to harm the one whom he considers like himself.

In view of all the above facts there is no justificaton to take meat. The only diet for human being is to take natural vegetables diet.

18 वें कारगिल विजय दिवस पर "शहीद स्मृति यज्ञ "जन्तर मन्तर" पर सम्पन्न
चीन के सामान का बहिष्कार व सरकारी ठेके रद्द करो

– डा. अनिल आर्य

बुधवार, 26 जुलाई 2017, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में 18 वें "कारगिल विजय दिवस" के अवसर पर "जन्तर मन्तर" पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य के नेतृत्व में "शहीद स्मृति यज्ञ" का आयोजन कर कारगिल के वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर सैंकड़ों आर्य समाजियों ने पहुॅच कर देष की एकता व अखण्डता की रक्षा का संकल्प लिया और चीन के सामान का बहिष्कार करने की अपील की।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि जब यह स्पष्ट हो चुका है कि भारत में आतंकवादी गतिविधियों में व कश्मीर में अलगाववाद के पीछे पाकिस्तान प्रायोजित आंतकवाद का हाथ है, अतः केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि अब पाकिस्तान को उसकी भाषा में ही कठोरता से जवाब दिया जाये। समय की मांग है कि सरकार आतंकवादियों व उनके मददगारों को सख्ती से कुचले, देश की रक्षा की कीमत पर कोई समझौता नहीं हो सकता। आतंकवादियों को सार्वजनिक रूप से फांसी दी जाये। उन्होंने कहा कि आतंकवाद की जननी पाकिस्तान जब तक दुनियां के नक्शे में रहेगा, तब तक विश्व में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। डा.आर्य ने केन्द्र सरकार से मांग की कि कारगिल के शहीदों की याद में दिल्ली में एक भव्य स्मारक बनाया जाये, जिससे उनके बलिदान से नयी युवा पीढ़ी प्रेरणा ले सके व केन्द्र सरकार से मांग की गई कि भारत में चीन के ठेके रद्द किये जाये।

इस अवसर पर आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने कहा कि कारगिल के शहीदों का बलिदान तभी सार्थक होगा जब हम पुनः वैसी परिस्थितियां न बनने दें। सरकार को पाकिस्तान पर कदापि भरोसा नहीं करना चाहिये। हमारी सहनशीलता को कमजोरी समझ लिया जाता है अतः पाकिस्तान को मुंह तोड़ उतर दिया जाये।

दिल्ली प्रदेश संचालक राम कुमार सिंह आर्य ने शहीदों के जीवन चरित्र को पाठ्य पुस्तकों में पढ़ाये जाने व शहीदों के परिवारों को पूर्ण सम्मान देने की मांग की। परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि शहीदों की अमानत है भारत की आजादी युवा शक्ति को उसे सम्भाल कर रखना होगा।

इस अवसर पर आर्य नेता रविन्द्र मेहता, बहिन गायत्री मीना, ओम प्रकाश पाण्डेय, वेद प्रकाश आर्य, सत्यपाल सैनी, देवेन्द्र भगत, कवि विजय गुप्त, महावीर सिंह आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री, सुरेन्द्र शास्त्री, कै. अशोक गुलाटी, अनिल हाण्डा, शिवम मिश्रा, गौरव आर्य, प्रदीप आर्य, विमल आर्य, सुदेश भगत आदि ने भी अपने विचार रखे। राष्ट्रपति व प्रधानमन्त्री के नाम ज्ञापन भी दिया गया।

– देवेन्द्र भगत–प्रवीन आर्य, प्रेस सचिव
फोनः 9312406810, 9911404423

मुरादाबाद में चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

11 से 18 जून तक जिला प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के तत्वावधान में सनातन धर्म इण्टर कॉलेज के मैदान में उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें लगभग 450 युवक एवं 80 कन्याओं ने भाग लिया।

बच्चों को आसन प्राणायाम लाठी, जूडो–कराटे आत्मरक्षा के लिए अभ्यास सिखाये गये, एक बच्चे ने धर्नुविद्या का सफल परीक्षण प्राप्त किया। समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि को उसने धनुर्विद्या द्वारा माला पहनाकर स्वागत किया। समापन समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी महाराज ने पहुंचकर बच्चों को आशीर्वाद दिया श्री ज्ञानेन्द्र गांधी डॉ. अभय श्रोती रमेश चन्द्र आर्य युवा संचालक लोकेश आर्य आदि महानुभावों का पूरा सहयोग रहा। मयंक आर्य भोजन व्यवस्था प्रमुख रहे। कार्यक्रम में पूरे जिले से आर्य समाजों के अधिकारी नगर समाजों के अधिकारी कॉलेजों, प्रिंसिपल, प्रबन्धक एवं क्षेत्र नेताओं ने भी भाग लेकर शिविर की गरिमा बढ़ाई।

प्रदेशीय आर्य वीर दल एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से सभी कार्यकर्ताओं एवं अधिकारियों को धन्यवाद दिया।

आर्य समाज अटौला में वेद प्रचार

1 व 2 जुलाई, 2017 को आर्य समाज अटौला, जिला–मेरठ में दो दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम रखा गया स्वामी अखिलानन्द सरस्वती गुरुकुल पूठ एवं मा. हरीशपाल जी आर्य भजनोपदेशक के विचारों से आर्य जनता लाभान्वित हुई प्रधान श्री विजेन्द्र सिंह आर्य मन्त्री रामरहीस आर्य एवं गहल सिंह, सुन्दर सिंह आर्य, म. राजपाल सिंह आर्य ने भी भजन सुनाये। आर्य जनता पर बहुत प्रभाव हुआ। स्मरण रहे ग्रामीण क्षेत्र में यह ऐसा आर्य समाज है जहां प्रातः सायं माइक द्वारा भजन एवं प्रातः दैनिक यज्ञ होता है आर्य समाज मंदिर बना हुआ है बच्चे योग भी करते हैं।

– ओमदत्त आर्य, उपमंत्री

शिक्षा सत्र शुभारम्भ पर यज्ञ एवं वेद प्रचार

3 जुलाई, 2017 सोमवार को आर्य समाज बहादुरगढ़ एवं यज्ञ समिति के प्रयास से श्री लालबहादुर शास्त्री इण्टर कालेज बहादुरगढ़ के प्राचार्य से प्रयास करके शिक्षा सत्र के शुभारम्भ पर विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ ब्रह्मा हरिसिंह आर्य रहे तथा संयोजक श्री अमरपाल सिंह आर्य रहे वेदपाठ आचार्य दिनेश गुरुकुल पूठ ने किया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी महाराज ने यज्ञ में पधार कर शोभा बढ़ाई तथा आर्यजनों एवं छात्रों को उपदेश दिया। फिर प्रधानाचार्य एवं प्रबन्ध समिति के प्रधान एवं प्रबन्धक सहित सभी को धन्यवाद दिया कि यदि आप सभी संस्था के प्रति जागरूक रहेगें तो छात्रों में चरित्र निर्माण एवं नैतिकता की भावना जागृत करने में कोई रुकावट नहीं होगी। कार्यक्रम अधिकारियों को इतना अच्छा लगा कि उन्होंने प्रतिवर्ष इसी प्रकार वेद प्रचार कराने की घोषणा की क्षेत्रीय आर्य समाजों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए। पुस्तक विक्रेता भी आये बच्चों ने कलेण्डर एवं पुस्तकें खूब खरीदी इसके लिए अमर पाल सिंह जी का विशेष प्रयास रहा, प्रभु उन्हें अच्छा स्वास्थ्य दें और उत्साह वेद प्रचार हेतु बना रहे।

"""Social Media """पर
""""आर्य समाज """" की नई पहल

नमस्ते आर्यजन

2 मिनट 'मिशन आर्यावर्त' के लिए जरूर दें।

आर्यजन हमने मिशन आर्यावर्त के whats app न्यूज बुलेटिन को शुरू किया है। जिसका बहुत सुंदर परिणाम मिला।अब तक लगभग 40 हजार whats app नंबर पर हर सप्ताह हम इसको शेयर करते हैं। इसके माध्यम से हम देश दुनिया में आर्य समाज के सकारात्मक स्वरूप को ले जाना चाहते हैं। आज आर्य समाज कार्य तो बहुत कर रहा है परन्तु उसको सामूहिक रूप से प्रसारित नहीं कर पा रहा। इस बुलेटिन के माध्यम से हम सम्पूर्ण आर्य जगत की गतिविधियों को शामिल करके आप लोगों तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। अभी इस बुलेटिन को सप्ताह में सिर्फ एक दिन प्रचारित व प्रसारित करने का विचार है वो भी रविवार को। इससे जुड़ने के लिए आपको दो कार्य करने है :–

(1) आपको अपना whats app नम्बर अपने नाम व स्थान के साथ लिख कर हमारे पास भेजना है। ताकि आपको निरंतर बुलेटिन मिलता रहे।

(2) आपको अपना समाचार फोटो के साथ व संक्षिप्त जानकारी के साथ हमारे whats app नम्बर पर भेजना है। ताकि हम उसको whats app बुलेटिन में शामिल कर सकें। इनको आप ग्रुप में पोस्ट न करके सीधे हमारे whats app पर पोस्ट करेंगे।

"""कुछ समय के बाद हम इसका वीडियो version भी तैयार करेंगे।

""""हमारा दूसरा कार्यक्रम"""

आर्य विचार मंथन

मेरे सात सवाल जिसमे लगभग 15 मिनट का किसी एक आर्य संन्यासी,नेता व विद्वान का साक्षात्कार होगा। जिसमे आर्य समाज के विषय पर उनके विचार लिए जायेंगें।

प्रतिदिन वेद, रामायण ,महाभारत, योग, चाणक्य, हितोपदेश आदि पर सुविचार भी आप तक भेजे जायेंगे। हमारा whats app नम्बर 9354840454 है। आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं। आपसे निवेदन है के आप इस सन्देश को ज्यादा से ज्यादा साथियों तक प्रचारित व प्रसारित करें ताकि मिशन आर्यावर्त के संकल्प को मजबूती मिल सके। यदि आप मिशन आर्यावर्त का हिस्सा बनना चाहते हैं हमारे साथ कार्य करना चाहते हैं तो भी आप सम्पर्क जरूर करें।

– ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

वैदिक सार्वदेशिक के सुधी पाठकों तथा एजेंटों की सेवा में

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्रिका का आजीवन सदस्यता शुल्क 2500/– रुपये तथा वार्षिक शुल्क 250/– रुपये है। जो महानुभाव एक साथ में 10 (दस) नये सदस्य बनाकर शुल्क राशि, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के कार्यालय में भेजेंगे, उन महानुभावों को ग्याहरवें सदस्य के रूप में "वैदिक सार्वदेशिक" साप्ताहिक पत्रिका निःशुल्क भेजी जायेगी। आर्य समाज के सिद्धान्तों मन्तव्यों के प्रचार–प्रसार तथा आर्य समाज की गतिविधियों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए वैदिक सार्वदेशिक के अधिकाधिक ग्राहक बनाकर अपना सहयोग प्रदान करें। **– सम्पादक**

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 28–29 जुलाई, 2017
प्रकाशन की तिथि : 27 जुलाई, 2017
वैदिक सार्वदेशिक
27 जुलाई से 2 अगस्त, 2017
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

अमेरिका के विभिन्न कार्यक्रमों की चित्रमय झलकियाँ

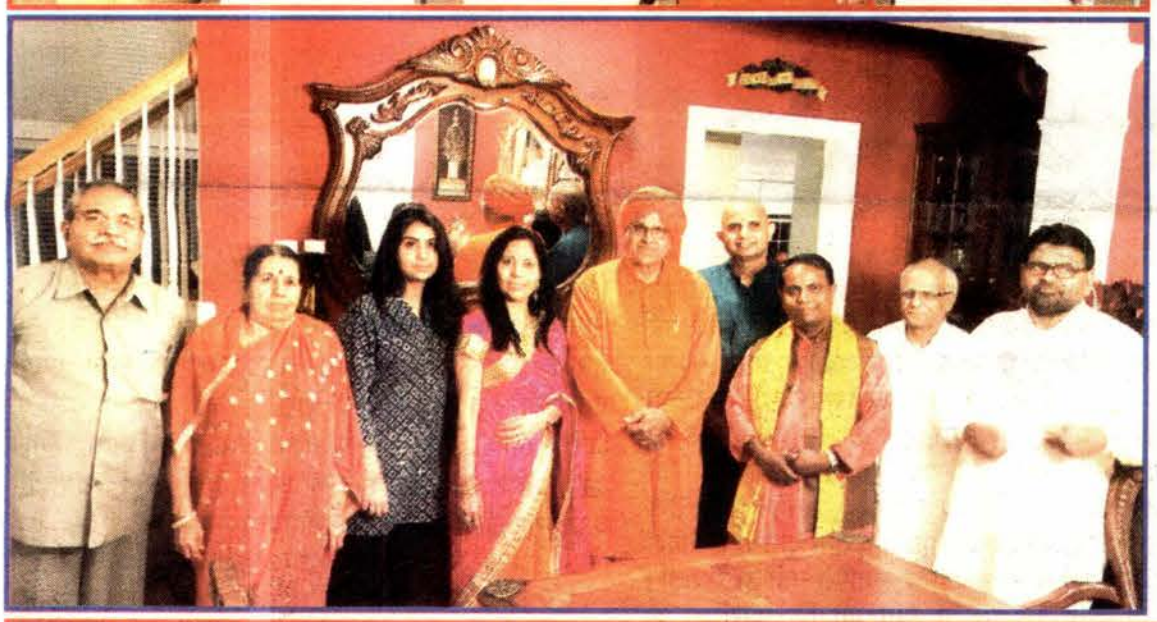

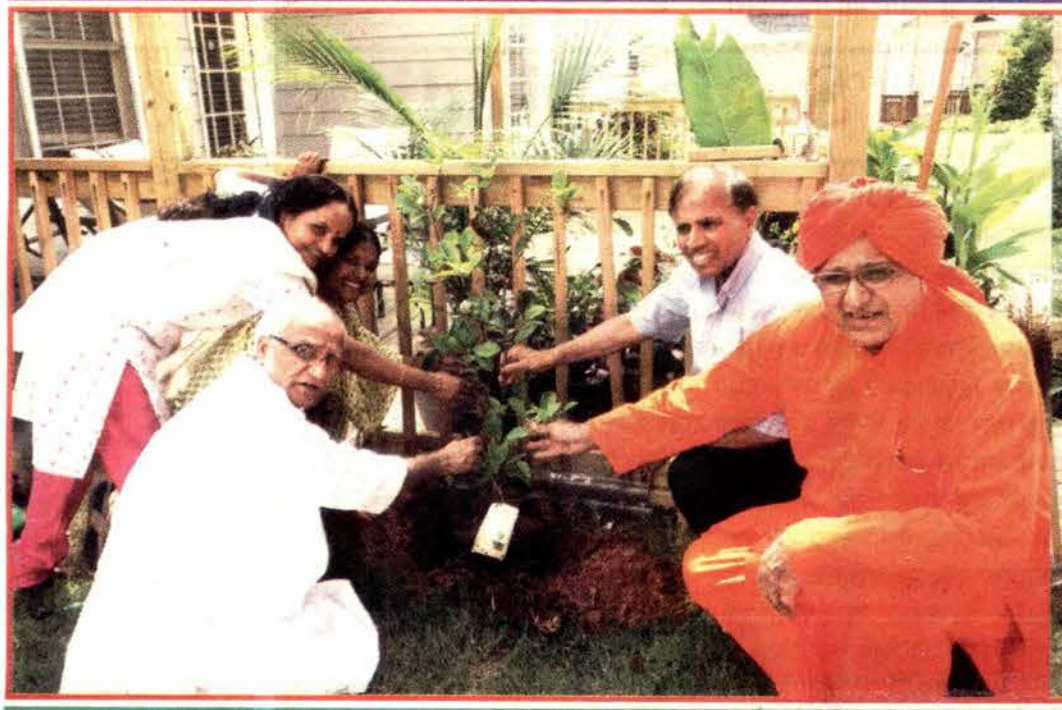

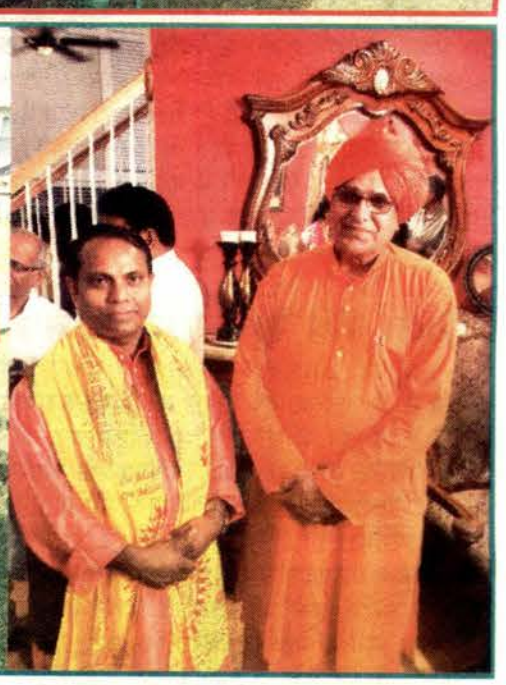

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।